मानव जीवन : कारण व निवारण

मानव शरीर की रचना कर्मफल के अधीन उसके जन्म व शरीर की विशिष्टताओं यथा माता, पिता, लिंग, स्थान, कालखंड और शेष सभी शरीर से संबंधित व्यक्तिगत विशिष्टताओं के साथ होती है | इसमें पूर्व स्मृति (पूर्व जन्मो की) हो - न - हो पूर्व निर्धारित संस्कार होते ही है | यही संक्षेप में संचित कर्म है | यह संस्कार का तत्व ही संचित निधि होती है जो हमारे वर्तमान जीवन की दशा निर्धारित करती है | दिशा तो हम अपनी प्रज्ञा से स्वयं तय करते है | स्थूल जगत के प्रति हमारा आग्रह और इसी के सत्य होने के प्रति हमारा अनुराग और तर्क हो सकता है, परन्तु प्रत्येक मानव की स्थिति, अनुभव और उसके व्यक्तिगत प्रयासों की विशिष्टताओं के कारण हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है की हमारा अवतरण विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ है | अपने जीवन की विभिन्न सीमाओँ के साथ उसके लक्ष्य को जानना अत्यंत आवश्यक है, क्योकि सम्पूर्ण प्रकृति, जिसके अधीन हमारी उत्पत्ति होती है, पूर्ण रूप से लयबद्ध है | प्रकृति में कुछ भी अतार्किक, अकस्मात्, और अविवेकी घटित नहीं होता है |

इसे लयबद्ध प्रकृति में चाहे वो माया रूप में दर्शन ग्रंथो के अनुरूप प्रतीति मात्र हो, हमारा अवतरण प्रकृति के संचालक, विधाता की इच्छाओं के अधीन होता है | उद्देश्य भी पूर्व निर्धारित होते है और उसकी पूर्ति हेतु साधन और ज्ञान भी उपलब्ध होता है | बस आवश्यकता इस बात की होती है की हम अपनी दृढ संकल्प शक्ति से अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जान सके और उसकी पूर्ति के लिए सही दिशा में कर्म पथ पर जाये | यह कर्म पथ पर प्रवृत होने की बात जब आती है तो यह विषय समिष्ट से व्यष्टि की ओर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर देता है | इस संरचना का गठन या नमूना समिष्टका भाव है | सबके लिए एक समान है परन्तु इसके जब मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव की बात आती है तब यह समिष्ट से व्यष्टि प्रवृतिक हो जाता है | हमारा अवतरण कैसा, किस प्रकार का और कब होगा, यह संचालक का समिष्टमूलक निर्णय होता जिसमे आधारभूत तत्व कलेक्टिव कांशसनेस होता | साथ ही यह प्रकृति व्यक्तिपरक दृष्टि से भी हम सबके लिए अनेक विशिष्टताओं के साथ हमारे अवतरण (जन्म) का प्रयोजन तैयार करती है | सम्पूर्ण समन्वय के साथ विधाता द्वारा प्रकृति के अधीन इस संरचना के निर्माण, प्रतिपालन और संहार की यही प्रक्रिया है |

इस प्रक्रिया के अधीन एक विशिष्ट मानव जब अपनी स्थिति के प्रति सजग होकर चिंतन करता और सचेष्ट होकर अपने आगे के कर्म - पथ को निर्धारित करने की चेष्टा में लगता है तब उसे इस संरचना, उसमे उसकी स्थिति, किया जा सकने हेतु प्रयास और अंततः इस हेतु मार्ग की खोज की आवश्यकता और अनिवार्यता समझ में आने लगती है और वह अन्वेषण में लग जाता | ज्ञान का जो अमृत वेद - उपनिषद से लेकर ज्योतिष शास्त्र तक का उपलब्ध है, जिसे हम आध्यात्म केंद्रित दर्शन ग्रंथ कह सकते, वो अनेक ढंग से इसकी व्याख्या करते की समिष्ट संरचना में व्यष्टि स्वरुप एक मानव के लिए सर्वोत्तम निर्दिष्ट कर्म-पथ क्या होगा | अतः सबसे पहले यह जानना आवश्यक है की मानव जीवन की मूल संरचना कैसी है ? इस तथ्य को समझने में निम्न तालिका कुछ सहायता कर सकती है | इस तालिका को आध्यात्म के सामान्य सिद्धांत, ज्योतिष शास्त्र के विचार, पतंजलि योग सूत्र के प्रति - प्रसव की अवधारण और आधुनिक पुनर्जन्म सिद्धांत के आधार पर तैयार किया गया है | इसमें जन्म-मृत्यु के अटल प्राकृतिक नियम, अभौतिक जगत घटित होने वाली प्रक्रिया के अतिरिक्त, भौतिक जगत में स्थूल जीवन के आरम्भ से उसके उद्देश्यपूर्ण समापन तक के मार्ग का दिशा निर्देशन है | आरम्भ में अंत निहित होता है, जन्म ही मृत्यु का कारण होती है | प्रकृति में बस एक नियम अपरिवर्तनशील है की परिवर्तन होगा ही होगा | ऐसी स्थिति में अगर हम कुछ सामान्य तथ्यों को जान कर, समझ कर, तदनुरूप अपने जीवन की दिशा निर्धारित करें तो कर्म-योगी के लिए जीवन-पथ पर सक्रियता सुगम हो जाती है और आध्यात्मिक जगत में सहज एकात्मकता प्राप्त हो जाती है |

इस तालिका को एक-एक कर समझते है |